IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

नई शिक्षा नीति में ''कला–शिक्षा'' की भूमिका

डॉ. शकुन्तला महावर
विभागाध्यक्ष (चित्रकला)
एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सांगानेर

''शोध–सार''

आज का युग युवाओं का युग है। उन्हें सुनहरे कल के लिए ऐसी षिक्षा अथवा प्रषिक्षण की आवष्यकता है, जो उन्हें रोजगार दे सकें अथवा उनका भविष्य संवार सकें। बच्चों व युवाओं में प्रतिभा होती है, जरूरत है तो उनकी इस प्रतिभा को पहचान कर उन्हें सही दिषा देने की। विष्व के किसी भी देष में दी जा रही कला षिक्षा की और दृष्टि डालें तो एक बात स्पष्ट है और वह ''गुण की महत्ता'' विज्ञान चाहें अपनी चरम स्थिति तक पहुँच कर रोबोट, कम्प्यूटर अथवा आर्टिफिषियल इन्टेलजेंसी के माध्यम से षिक्षार्जन करवा लें, किन्तु कलाओं के क्षेत्र में उसकी असमर्थता कायम रहेगी। वह कला का सहयोगी अवष्य हो सकता है, किन्तु विकल्प नहीं बन सकता है।

आज समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि 1986 की षिक्षा नीति में कुछ खामियां है इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है किन्तु यह ज्ञान उसे भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बना पा रहा है। देष में कई दषकों के बाद षिक्षा के क्षेत्र में नई षिक्षा नीति 2020 का लागु होना एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। नई षिक्षा नीति में काफी बदलाव किया गया है। अभी तक जिन विषयों को केवल सहयोगी विषय के तौर पर जाना और पढ़ाया जाता है वह अब उन्हें षिक्षार्थी मुख्य विषय के रूप में चुन कर कला के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे या अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते है।

''कला की षिक्षा किसी देष की संस्कृति की कुंजी है'' मनुष्य अपने भावों को प्रकट करने के लिए भिन्न–भिन्न शारीरिक–क्रियाओं वक्तव्यों, चित्रों व संकेतों का प्रयोग करता है। अभिव्यक्ति की इन्हीं विभिन्न विधाओं को कला की संज्ञा दी जाती है। वर्तमान समय में कला ने नई दिषा में कदम रखा है। कला के पुनरूज्जीवन या पुनरूत्थान, व्यापार और उद्योगों के विकास एवं सरकार के संरक्षण से मिलीजुली कला के प्रति आम उमंग ने सारी कलाओं को व्यवसाय बना दिया है। अतः कलात्मक षिक्षा जीविका साधन के रूप में अपनाई जा रही है। जिससे यह रोजगार का एक आयाम बनकर सामने आई है।

मूलशब्दः– कला षिक्षा, रोजगार कौषल, अभिव्यक्ति, नई षिक्षा–नीति, व्यवसाय, योजना सुसंस्कृत।

प्रस्तावना

''म्कनबंजपवद पे ं स्पमि सवदह च्तवबमेष्ष षिक्षा एक राष्ट्रीय महत्व का प्रष्न होती है। कल–कारखानों, नवीन अनुसंसाधनों, कृषि उत्पादनों के समान ही इसका अपना संस्थागत महत्व होता है। जहॉ अन्य प्रकार के आयोजनों में केवल निर्जीव वस्तुओं का उत्पादन होता है। वहीं षिक्षा के द्वारा मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है। सदचरित्र और अच्छे संस्कारों से युक्त मनुष्य ही सुदृढ़ समाज और सुव्यवस्थित राष्ट्र का निर्माण करते है।[1]

शिक्षा का सामान्य अर्थ है–''ज्ञान का वितरण एवं ज्ञान की प्राप्ति'' षिक्षा का उद्देष्य मनुष्य में ज्ञान और चेतना को जाग्रत करना है। ज्ञान दो प्रकार का होता है एक सैद्धान्तिक और दूसरा व्यवहारिक।

पहला ज्ञान केवल सीखने और प्राप्त करने तक ही सीमित रहता है। जबकि दूसरा ज्ञान, प्राप्त ज्ञान के द्वारा नवसृजन अथवा उपयोग सम्मिलित रहता है। कला दूसरे प्रकार का ज्ञान माना जाता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

सम्भवतः भारतीय षिक्षा–पद्धति नितान्त मौलिक स्व संस्कारों से निर्मित अपनी विषिष्टताओं में पगी हुई थी। यह कारण था कि भारतीय जन उससे परिचित था, अतः उसे सहज भाव से ग्रहण कर लेता था।

शिक्षक फ्रायबेल ने अपनी ''एजूकेषन फॉर मैन'' नामक पुस्तक में लिखा है। मनुष्य भाषा द्वारा केवल विचार को प्रकट कर पाता है। उससे उसके पूरे व्यक्तित्व का प्रकटन नहीं होता। कला–प्रवृतियॉ और भाषा दोनों मिलकर ही मनुष्य की पूरी प्रकृति का दर्षन कराती है। उसमें खास तौर पर चित्रकला के बारे में वे कहते है। उसका लाभ केवल यह नहीं कि बालक बाहरी जगत का ठीक तरह से प्रतिबोधन कर सकें। यह कला बालक को ऐसे जगत में प्रवेष करने में मदद करती है, जो ऊपरी तौर पर अदृष्य है, किन्तु जिसमें ज्ञान संचार की शक्ति है। [2.]

युनान के दार्षनिक प्लेटों से सभी परिचित है। उनका लिखा ग्रंथ ''रिपब्लिक'' उनके आदर्ष समाज का चित्र है। प्लेटों का दर्षन ही था कि षिक्षा में वह शक्ति होनी चाहिए, जिससे व्यक्ति में छंद व सामंजस्य का निर्माण हो कला षिक्षा को एक शास्त्र के तौर पर प्लेटों ने प्रस्तुत किया।[3.]

शिक्षा अक्षर ज्ञान या शब्द ज्ञान के रूप में अव्यवस्थित और अराजकतापूर्ण जानकारियों का ढ़ेर नहीं है, यह तो जीवन निर्माण, मानव निर्माण और चरित्र निर्माण की निरन्तर चलने वाली यह एक व्यापक अर्थ धारण करने वाला शब्द है। इसमें विचारों और व्यवहारों को प्रांजल करने का सामर्थ्य है। इसमें मानवजातियों और राष्ट्रों को सुसंस्कृत बनाने की क्षमता है। प्राचीन काल में ऋषियों में कुछ यायावरी प्रकृति के थे। जो घुमते रहते थे और ज्ञान का प्रचार घर–घर, व्यक्ति–व्यक्ति तक जाकर करते थे। यह उस युग की षिक्षा का ही एक रूप था। [4.]

शिक्षा का मूलार्थ सम्पूर्ण जीवन को सही रूप में विकसित करने में ऐसी दृष्टि–षक्ति प्रदान करना था। जो आर–पार देखने की क्षमता रखती है। षिक्षा साध्य नही है यह पूर्णता प्राप्त करने का समर्थ साधन है। जीवन का लक्ष्य ही पूर्णता प्राप्त करना विद्यार्थी जीवन इसी की तैयारी है। जो पूर्णतः शक्ति रूप में अभ्युदय, श्रेय और सिद्ध प्रदान नहीं करती वह षिक्षा बांझ होती है। उसमें उत्पादन करने की शक्ति का अत्यन्त अभाव होता है। [5.] उन्नतिषील जीवन की ठोस योजना हमारे पास होनी चाहिए।

महात्मा गांधी जैसे महान विचारक, दार्षनिक, राजनीतिज्ञ ने भी कहा है कि ''साक्षरता स्वयं में कोई षिक्षा नहीं है। इसलिए तो बालक की षिक्षा कोई उपयोगी दस्तकारी सिखाकर शुरू करना पसन्द करूगा, जिससे जिस क्षण वह अपनी तालीम शुरू करेगा, उसी क्षण से उत्पादन करने लगेगा''। मैं भारत के लिए अनिवार्य और निःषुल्क प्राथमिक षिक्षा के सिद्धान्त का दृढ़ समर्थक हूँ। यह उद्धेष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब हम हर बच्चे को एक उपयोगी व्यवसाय सिखाएं और उसका उपयोग उसके शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं को विकसित करें, इसे दूसरे शब्दों में यूं कह सकते हैं कि एक बच्चे के शारीरिक अंगों का बेहतर इस्तेमाल ही उसके मस्तिष्क के विकास की कूंजी है।

गांधीजी राजनीति में प्रवेष के पहले ही भारत में प्रचलित षिक्षा के दोषों को जान चुके थे और वे मानते थे कि उस समय जो शिक्षा दी जा रही थी। वह षिक्षा सिद्धान्तों से परे थी, भारत जैसे विषाल जनसंख्या वाले विकासषील देष में युरोपीय देषों से बढ़ता यांत्रिकीकरण उनकी चिंता का प्रमुख कारण था, जिसके कारण युवा शक्ति में बेरोजगारी की समस्या बढ़ती ज रही थी। भारतीय युवा शक्ति के श्रम को वे ज्यादा से ज्यादा राष्ट्रहित में उपयोग करना चाहते थे। वे अहिंसक समाज का निर्माण करना चाहते थे, जो स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर भी हो तथा सामाजिक ढॉये को बदलने के लिए षिक्षा में आरम्भ से ही सुधार करना, उन्होने आवष्यक समझा ये मात्र किताबी षिक्षा के स्थान पर कौषल एवं दस्तकारी से सम्बन्धित तकनीकी षिक्षा दिये जाने के प्रबल समर्थक थे, ताकि विद्यार्थी स्वावलम्बी बन सकें तथा उनका शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से समुचित विकास हो इसके

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

लिए उन्होंने एक योजना भी प्रस्तुत की जिसे ''बुनियादी षिक्षा'' या वर्धायोजना कहते है। जिसको प्राप्त करने के पष्चात उन्हें रोजगार की तलाष में इधर–उधर न भटकना पड़े।

शोधपत्र का उद्धेष्य एक प्रारूप–

कला किसी भी राष्ट्र की बदलते वैष्विक परिदृष्य में केवल ज्ञान पर आधारित षिक्षा की ही आवष्यकता नहीं है, क्योंकि यह षिक्षा विद्यार्थी को भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बना पा रही है। देखा जाय तो अब तक की हमारी षिक्षा–व्यवस्था ऐसी हो गई है, कि बचपन बस्ते के बोझ तले दबता चला जा रहा है। जब कि हमारी षिक्षा व्यवस्था को ऐसा होना चाहिए कि बच्चों को किताबी कीड़ा बनाने की बजाय उसकी नैसर्गिक रचनात्मक प्रतिभा को उभार कर जीवन उपयोगी बनाएं। बच्चों का मुल्यांकन केवल इसी आधार पर नहीं होना चाहिए कि उसने कितने अंक प्राप्त किये, बल्कि यह देखना चाहिए कि उसकी रूचि किस क्षेत्र में ज्यादा है और वह जीवन में इस क्षेत्र में आगे बढ़कर एक सफल इंसान और समाज के लिए कितना उपयोगी हो सकता है।[6.]

आधुनिक समय में कैरियर का क्षेत्र व्यापक रूप से खुला है, किन्तु युवाओं का एक बड़ा वर्ग दिग्भ्रमित होने से बेरोजगारी से ग्रस्त है। इस अज्ञान से निकल कर ज्ञान की और उन्हें ले जाना होगा।

भारत संस्कृति का खजाना है, जो हजारों वर्षों से विकसित है, कला साहित्य, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ज्ञान–विज्ञान, विरासत स्थलों और अन्य कार्यों के रूप में यहाँ की कला संस्कृति ही उस राष्ट्र की उन्नति की आधार षिला होती है। कला षिक्षा, कला संस्कृति, संस्कार ही देष को समृद्ध व उन्नतिषील बनाते है। राष्ट्र निर्माण में हर नागरिक का महत्वपूर्ण योगदान होता है और षिक्षित नागरिक ही महान राष्ट्र का निर्माण करते हैं। आज का नवजात षिषु कल का सफल नागरिक होता है। उसकी षिक्षा–दीक्षा और संस्कार से ही देष की सफलता निर्भर होती है। संस्कृति और कला षिक्षा में बहुत प्राचीन व गहरा संबंध है। संस्कृति और कला षिक्षा का संबंध इस तथ्य से भी ज्ञात होता है, कि षिक्षा संस्कृति के विषयवस्तु का विकास करती है। भारत की संस्कृति ओर प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण और संवर्धन देष के लिए एक उच्च प्राथमिकता माना जाना चाहिए, क्योंकि यह वास्तव में देष की पहचान के साथ–साथ उसकी अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारतीय कला और संस्कृति का प्रचार न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि व्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक जागरूकता और कला अभिव्यक्ति बच्चों में विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण मानी जाने वाली प्रमुख दक्षताओं में से एक है।[7.]

लेकिन जब देष पर बाहरी आक्रांताओं व अंग्रेजों का राज हुआ तो उन्होंने भारतीय षिक्षा पद्धति को बदलकर रख दिया परिणामस्वरूप भारतीय जनमानस अपने विचारों, सभ्यता संस्कृति की जड़ो से कटता चला गया। आज समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि हमारी षिक्षा नीति में कुछ खामियॉ है। इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है, किन्तु यह ज्ञान उसे भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बना पा रहा है। भारतीय इतिहास में झांकने से पता चलता है, कि आदिकाल से संस्कृति, कला षिक्षा का प्रचार–प्रसार एवं विकास विविध प्रकार से होता रहा है। प्रत्येक देष अपनी सामाजिक संस्कृति को अभिव्यक्ति देने और पनपने के लिए अपनी विषिष्ट षिक्षा प्रणाली विकसित करता आया है, जब मुद्वतों से चले आ रहे सिद्धान्तों, नियमों को एक नई दिषा देने की नितान्त जरूरत हो जाती है। आज वही समय है। षिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

बचपन से व्यक्ति जो पढ़ता है, देखता है, उसी से उसकी विचारधारा का निर्माण होता है और आगे जाकर वहीं उसका व्यक्तित्व बन जाता है। मनुष्य का जीवन गुणों और प्रतिभा का भण्डार है और यदि किसी भी मनुष्य के आधारभूत गुणों या ईष्वर प्रदत्त प्रतिभाओं का पूर्ण सदुपयोग जीवन में नहीं किया जाता है, तो उसके गुण और प्रतिभाएं व्यर्थ ही हो जाती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

हम अपने बाल्यकाल से एक ऐसी षिक्षा पद्धति की छत्र–छाया में पले बढ़े, जिसमें सब विद्यार्थी एक–दूसरे की देखा–देखी कोर्स का चयन करते थे, उनकी प्रतिभाओं का आकलन न षिक्षक करते थे न ही अभिभावकों की ही दूरदृष्टि इस ओर जाती थी। विद्यार्थी इंजीनियरिंग, मेडिकल, चार्टेड अकाउटेंट, आर.ए.एस या किसी अन्य नौकरी के लिए ही पढ़ाई करता था और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सरकारी नौकरी ढूंढ़ने का प्रयास करता रहता था। उसके गुणों प्रतिभा का आंकलन कर सही दिषा नहीं दी जाती थी।

नई राष्ट्रीय षिक्षा नीति

नई राष्ट्रीय षिक्षा नीति से पूर्व स्वतंत्रता के बाद दो षिक्षा नीति लागु हुई, जिससे षिक्षा व्यवस्था का संचालन हो रहा था। 1968 में पहली षिक्षा नीति की घोषणा कोठारी कमीषन की सिफारिषों पर आधारित थी। इस नीति को तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने लागु किया था। जिसका मुख्य उद्धेष्य देष के सभी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण षिक्षा उपलब्ध कराना था। दूसरी षिक्षा नीति 1986 में मंजूर की गई, जिसे तत्कालीन राजीव गांधी सरकार के द्वारा संसाधनों वाली षिक्षा पर जोर दिया गया। इस षिक्षा नीति में आधुनिकीकरण, बुनियादी सुविधाओं, पिछड़े वर्गों, दिव्यांगों और अल्पसंख्यक बच्चों की षिक्षा पर अधिक ध्यान दिया। उस समय की मांग के आधार पर यह षिक्षा नीति ठीक थी, लेकिन वर्तमान युग आधुनिक तकनीक (आर्टिफिषियल इन्टेलजेन्सी) का युग है। प्रकृति पर्यावरण और समय बदल रहा है। इस युग में युवा वर्ग के सामने बहुत सी रोजगार की चुनौतियॉ है, उसे मुख्य रूप से कौषल आधारित अधिगम एवं रोजगार की आवष्यकता है। भारत दुनिया का सबसे युवा आबादी वाला देष है। अब 34 वर्षों पष्चात बहुत बड़े विचार–विमर्ष के बाद 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा तीसरी राष्ट्रीय षिक्षा नीति की घोषणा की गई। इस षिक्षा नीति के विचार–विमर्ष में 2 वर्ष का समय एवं 2 करोड़ से अधिक लोगों के सुझाव समाहित है। अंतरिक्ष वैज्ञानिक पद्म विभूषण डॉ. के कस्तुरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित नई षिक्षा नीति की घोषणा के साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर अब षिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। 5334 संरचना वाली शैक्षणिक नीति में 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल किया गया है। यह षिक्षा नीति विद्यालयी षिक्षा में सबसे बड़े परिवर्तन की पक्षधर है। बालक की प्रारम्भिक अवस्था जिसे फाउंडेषन स्टेज (नींव) कहते है। उसे पूर्णरूप से मजबूत करने की बात इस नीति में कहीं गई है।

इन प्रारम्भिक 5 वर्षों में बालक के खेलकूद, संगीत, कला, योग, साहित्य, गणित, कौषल के साथ शारीरिक व मानसिक विकास पर ध्यान दिया जायेगा। इन वर्षों में उसे यह सब कुछ अपनी भाषा में ही सिखाया–पढ़ाया जायेगा। मिडिल स्टेज में छठी क्लास से ही विद्यार्थियों को निष्चित व्यावसायिक व उदारवादी कला षिक्षा में देष की 64 कलाओं को बढ़ावा मिलेगा। यह षिक्षा का एक ऐसा उभरता क्षेत्र है, जो व्यावसायिक मूल्यों, सिद्धान्तों और आवष्यक प्रबंधन तथा कौषल का तरल सम्मिश्रण तैयार करता है। मनुष्य को अपनी सामाजिक चुनौतियां से निपटने और आगे बढ़ाने के विकल्प सुझाता है। यह युवाओं को ऐसे मूल्यों से सम्पोषित करता है, जो समेकित दृष्टिकोण के साथ पर्याप्त सम्भावनाओं को उकेरने की दिषा में प्रेरित करते है। बुनियादी षिक्षा के साथ विषय विषेषज्ञ की षिक्षा देना इसकी विषेषता है। इससे विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को पहचान कर भविष्य के लिए एक निष्चित क्षेत्र का चयन कर सकेगा।[8.]

इस नीति का सूत्र वाक्य ''नेषन फर्स्ट–करेक्टर मस्ट'' अर्थात राष्ट्रीय हित के साथ चरित्र निर्माण पर जोर रहेगा। निष्चय ही यह नीति षिक्षा व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं एवं उद्धेष्यों का पूरा करने में एक विजन डाक्यूमेंट है। इस नीति के अंतर्गत विद्यार्थी पूर्ण स्वतंत्र रहेगा। उस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं होगा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

षिक्षा में स्वतंत्रता का महत्व जर्मनी के फ्रायबेल नामक षिक्षा शास्त्री ने दिखाया। सबसे क्रांतिकारी काम वियना के फ्रांजसिजेक ने किया। उन्होंने कला षिक्षा की एक क्रांतिकारी पद्धति का निर्माण किया। उन्होंने स्वयं कहा है– मैंने बालकों को दबाव से मुक्त कराया, मैने उनसे कहा कि, जो तुम बनाते हो वह अच्छा है। मैंने यह सब जो किया, वह एक षिक्षा शास्त्री के नाते नहीं, बल्कि एक मानव व एक कलाकार होने के नाते किया। ऐसी चीजें षिक्षा शास्त्र से नहीं मिलती। वे मिलती है मानवीय कलात्मक भावना से। उन्होने अनेक विरोधों के बावजूद बालक के प्रति अपनी श्रद्धा व प्रेम को कायम रखा और यहाँ तक कहा कि बालक की कलाकृतियों की सबसे सुन्दर वस्तु उसकी गलतियॉ है। यही सच्ची क्रांति है। सच्ची और शुद्ध स्वतंत्रता जिसमें व्यक्ति अपने मन के अनुसार पुरा–पुरा विकास कर सकें।[9.]

अतः शिक्षा की योजना बहुत समझ–बुझकर बनानी चाहिए। उसका आधार मुख्यतः दो बातों पर रहना चाहिए। पहला षिक्षा का उद्धेष्य यह हो कि मानव व समाज के लिए जो आदर्ष नियम तैयार हुए है। उन आदर्षों की तरफ बढ़ता रहे। मानव संस्कृति व सभ्यता के लिए जो पद्धति तैयार करना चाहता है। षिक्षा उस पद्धति का निर्माण करें। दूसरा व्यक्ति और समाज के गुण–धर्म को समझे अर्थात आदर्ष चाहे कितना भी ऊॅचा क्यों न हो, षिक्षा का तरीका इस गुण–धर्म को सामने रखते हुए ही बनाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि जिसे ढ़ालना है। उसे उसके गुण–धर्म के आधार पर ही ढ़ाला जा सकता है। जैसे कोई मूर्ति बनानी होती है, तो पहले जिस माध्यम में बनानी है, उसके उस चरित्र को समझना होगा। लकड़ी की होगी, तो खुदाई द्वारा, कांसे की होगी तो वह ढ़लाई के द्वारा बनेगी। इसी प्रकार षिक्षा की योजना सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्ष और मुख्य स्वभाव दोनों के मिलाने से ही बननी चाहिए। षिक्षा पद्धति एवं समाज व्यवस्था का घनिष्ठ संबंध है। एक विषिष्ट उद्धेष्य को सामने रखकर ही षिक्षा नीति का निर्माण करना चाहिए। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यह षिक्षा नीति तैयार की गई है। यदि सही तरीके से राष्ट्रीय षिक्षा नीति लागु होती है। तो निष्चित ही भविष्य के स्वर्णिम भारत की आधार षिला साबित होगी।

निष्कर्षः–

नई शिक्षा नीति 2020 के विष्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है, कि यह षिक्षा नीति समय की मांग को पुरा करने व विष्व स्तर पर भारतीय ज्ञान, विज्ञान और कला संस्कति को पहुंचाने की एक महत्वकांक्षी नीति है। यह नीति रोजगार सृजन व नए विषयों तथा ज्ञान के क्षेत्रों में षिक्षा के द्वार खोलेगी। नई षिक्षा नीति का लक्ष्य युवा वर्ग के व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार करना है कि, उनमें अपने मौलिक दायित्वों, संवैधानिक मुल्यों देष के साथ जुड़ाव बदलते विष्व में नागरिक के कर्तव्य और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक हो सकें। कला षिक्षा विद्यार्थियों की कल्पनाओं व विचारों को सृजनात्मकता का जामा पहनाती है। यह सोचने, आलोचना करने दूसरों को अपने पक्ष में राजी करने, बोलने, लिखने और तार्किक ढंग से सोचने के कौषल की क्षमता को बढ़ाने में सहायता करती है।

वर्तमान युग आधुनिक तकनीक एवं ज्ञान का युग है। इस युग में युवा वर्ग के सामने बहुत सी रोजगार की चुनौतियां है। इस नीति में व्यावसायिक षिक्षा और कौषल विकास पर जोर दिया गया है। इससे विद्यार्थी पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होंगे व साथ ही रोजगार के भरपूर अवसर उपलब्ध होंगे।

संदर्भ ग्रंथः–

1. मोनिक चौधरी :– वॉस्ट एण्ड विजन ए जनरल ऑफ विज्यूअल आर्ट, 2009–10
2. फ्रायबेल :– एजुकेषन ऑफ मैन, डी.एफ. लंदन सेंचुरी कम्पनी, लंदन
3. प्लेटो :– द रिपब्लिक : मॉर्डन लाईब्रेरी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 5, March 2024

4. नन्दलाल बोस :– षिल्पकला साहित्य भवन लि. इलाहाबाद, 1952
5. रवीन्द्रनाथ टैगोर :– षिक्षा कैसी हो हिन्दी
6. फ्रायबेल :– एजुकेषन ऑफ मैन, डी.एफ. लंदन सेंचुरी कम्पनी, लंदन
7. आनन्द कुमार स्वामी :– डांस ऑफ षिवा, एषिया पब्लिषिंग हाऊस, 1956
8. NEP Final English PDF 10.08.2020 को संदर्भित